

प्र०

उ० खानपान की मिश्रित संस्कृति से लेखक का तात्पर्य सभी प्रदेशों के खान-पान के मिश्रित रूप से है। यहाँ पर लेखक यह कहना चाहते हैं कि आज एक ही घर में हम कई प्रांतों के खाने देखने के लिए मिल जाते हैं। लोगों ने उद्योग धंधों, नौकरियों व तबादलों के कारण व अपनी पसंद के आधार पर एक-दूसरे के प्रांत की खाने की चीजों को अपने भोजन पदार्थों में शामिल किया है। मेरा घर कोलकता में है। मैं बंगाली परिवार से हूँ। हमारा मुख्य भोजन चावल और मछली है लेकिन हमारे घर में चावल और मछली के अलावा दक्षिण भारतीय व्यंजन इडली, सांभर, डोसा आदि और पाश्चात्य भोजन बर्गर व नूडल्स भी पसंद किए जाते हैं। यहाँ तक कि हम इन्हें बाजार न लाकर अपने ही घर में बनाते हैं।

प्र० 2

- उ० खानपान में बदलाव के निम्न जायदे हैं।
1. भिन्न प्रदेशों की संस्कृतियों को जानने और समझने का मौका मिलता है।
 2. राष्ट्रीय एकता में बड़ावा मिलता है।
 3. अलग-अलग प्रकार के भोजन पदार्थ खाने को मिलते हैं। उससे खाने में रुचि बढ़ती है।
 4. देश-विदेश के व्यंजनों, खानपान के बारे में पता चलता है।
 5. हम स्वाद, स्वास्थ्य के आधार पर भोजन का चयन कर सकते हैं।
 6. समय की बचत रहती है।
 7. खानपानों में शुद्धता की कमी होती जा रही है।

प्र० 3

उ० खानपान के मामलों में स्थानीयता का अर्थ है कि व

व्यंजन जो स्थानीय वचन परसदे एवं उपलब्ध के साधनों के आधार पर बनते थे जैसे मुम्बई की पाव-भाजी, दिल्ली के छोले-कुलचे मथुरा के पेड़े व अगरा के पेड़े, नमकीन तो कहीं किसी प्रदेश की जलेबियाँ, पूड़ी और कर्चोड़ी आदि स्थानीय व्यंजनों का अत्याधिक चलन था। अब स्थानीय व्यंजनों का प्रचलन धीरे-धीरे कम होता जा रहा है।